मैगजिन्स और न्यूजपेपर्स वगैरह आते हैं और 10 परसेंट वे किताबें आती हैं, जिन को फ़िक्शन कहते हैं । अगर माननीय सदस्य एक लिस्ट बना दें कि कौन सी किताब अच्छी है और कौन सी बुरी है, तो हम उस को देखेंगे ।

Shri M. R. Krishna: Why should the hon. Minister go by his list?

श्री किशन पटनायक : आधी लिस्ट तो मैं ने दे दी है ।

श्री मनुभाई शाह : भेज दीजिए ।

Shri Hem Barua: I wanted to give him a list.

Mr. Speaker: He might give that list to the hon. Minister afterwards.

Shri Sham Lal Saraf: May I know whether Government are aware that as far as the mid-engineering courses are concerned, text-books are not available within the country, other than at the university level, and also at the level where no university courses are being taught, and if so, whether some attention has been given to them so that our technicians at the lower level are able to get text-books?

Shri Manubhai Shah: As regards the type of technical books and codified literature which the universities or educational institutions would like to import, we shall enable them to do so.

Shrimati Yashoda Reddy: Apart from books for the universities, may I know whether Government have got any programme to ease the situation in regard to atlasses for the boys in schools, as these are not available in India?

Shri Manubhai Shah: Yes, that is a good suggestion.

श्री ओंकार लाल बेरवा : मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या दिल्ली में हुए सम्मेलन में पुस्तक विक्रेता संघ ने इस तरह का कोई आवेदन पत्र दिया है कि सरकार विदेशी पुस्तकें न मंगाए, हम उसी कीमत पर उन पुस्तकों को छापने के लिए तैयार हैं ?

श्री मनुभाई शाह : मैं ने पहले कहा है कि यह एक अच्छी सजेशन है कि जिस पुस्तक का कापीराइट न हो और जिस की पांच सौ से ज्यादा प्रतियां चलती हों, उस को हम छापने की कोशिश करें । जैसा कि मैं ने बताया है, इस पर विचार हो रहा है ।

कोयले का मूल्य

+

*778. **श्री हुकम चन्द कछवाय :**
श्री यशपाल सिंह :

क्या खान तथा धातु मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या श्रमिकों को बोनस देने के उद्देश्य से कोयला उद्योग में कोयले तथा कोक के दाम बढ़ा दिये गये हैं ;

(ख) इस राशि को मिल मालिकों से, जो बहुत बड़ी मात्रा के कोयले की खपत करते हैं, वसूल करने के बजाय छोटे उपभोक्ताओं पर यह भार लादने के क्या कारण हैं ; और

(ग) दामों के बढ़ाये जाने के बारे में सरकार की क्या प्रतिक्रिया है ?

The Deputy Minister in the Ministry of Mines and Metals (Shri S. A. Mehdi): (a) to (c). The prices of coal and coke are controlled by the Central Government in pursuance of clause 4 of the Colliery Control Order, 1945. The payment of bonus is an obligation to be discharged by the industry under the provisions of the Payment of Bonus Act, 1965. In order to enable the industry to secure funds to pay bonus, a price increase of 40 paise per tonne of coal was granted on the 24th December, 1965. This price increase has been allowed by the Government and not 'raised' by the industry.

श्री हुकम चन्द कछवाय : मैं यह कहना चाहता हूं कि कोयला खानों में आज काफ़ी तादाद में कोयला पड़ा हुआ है, जो बिकता नहीं है, क्या उस के लिये सरकार यह प्रयत्न करेगी कि वह कोयला गांवों में पहुंच सके और वहां जलाने के काम में आ सके ? क्या इस के लिये सरकार विचार कर रही है ?

श्री सं० अ० मेहदी : इस के ऊपर विचार हो रहा है । अभी फूड-मिनिस्टर साहब के साथ मीटिंग हुई है, जो आपने कहा है उस पर गौर हो रहा है ।

श्री हुकम चन्द कछवाय : मजदूरों को बोनस का लाभ मिले, इस के लिये कोयले की कीमत बढ़ाई गई है—पिछली बार मंत्री जी ने बताया था कि यह बात सही है । क्या सरकार इस बात को देखेगी कि कोयले का मूल्य बढ़ने के बाद भी उन को बोनस मिला या नहीं, तथा उन्हें पर्याप्त मात्रा में बोनस मिले, तथा उस में विलम्ब न हो, क्योंकि कोयले का मूल्य इसी लिये बढ़ाया जा रहा है ।

श्री सं० अ० मेहदी : नहीं ऐसी तो कोई बात नहीं है । बोनस जो बढ़ाया गया है, वह तो एक्ट के अन्दर बढ़ाया गया है और उसी की वजह से मूल्य भी बढ़ाये गये हैं ।

श्री यशपाल सिंह : यह अमूल कि कीमत बढ़ाकर बोनस दिया जाय, यह तो उचित नहीं है । इस तरह से तो शुगर मिल मालिक या क्लाथ मिल मालिक भी कहेंगे कि पहले कीमत बढ़ाओ, फिर बोनस देंगे । बोनस तो जो वे प्राफिट कमा रहे हैं, उस में से मिलना चाहिये ।

The Minister of Mines and Metals (Shri S. K. Dey): The price of coal today is controlled, and in the conditions of the industry today, the colliery-owners are having grave difficulties. That was why it was found that it is not possible for them to pay the bonus unless some allowance was made by Government to provide for it by increase in the price.

श्री रामेश्वरानन्द : मैं यह जानना चाहता हूं कि जैसे कोयले का मूल्य बढ़ाकर बोनस दिया जायेगा, इस से तो महंगाई और बढ़ेगी और फिर उस महंगाई को रोकने के लिये आपको फिर कीमत बढ़ानी पड़ेगी । आखिर यह जो गोरखधंधा है, क्या सरकार इसके लिये कोई अन्तिम निर्णय नहीं कर पाई है, यह जो क्रम है, कि दर बढ़ाते चलो, यह कब तक चलेगा ?

Shri S. K. Dey: Dearness is something indivisible, and I do not believe you can discriminate one sector from the other.

श्री रामेश्वरानन्द : मंहगाई क्या ऐसी बात है कि दिखाई नहीं पड़ती । आंखों से मंत्री जी नहीं देखते होंगे, परन्तु वैसे तो दिखती होगी ।

Shri Bhagwat Jha Azad: He is casting aspersions.

Shri Indrajit Gupta: The Minister stated that this increase in price was sanctioned on 24th December, 1965. Is he aware that although this price increase was granted three months ago, the bonus on account of which the increase was allegedly granted has not been paid upto today? How is it that they follow this process of increasing the price without checking whether it is actually put to the purpose for which it is supposed to be put?

Shri S. K. Dey: The hon. Member will appreciate that the price increase was given not with retrospective effect.

Mr. Speaker: The complaint is that it has not been actually paid.

Shri Indrajit Gupta: Three months have passed.

Shri S. K. Dey: The bonus is being paid. The Minister of Labour has

discussed this question with the owners.

Shri Indrajit Gupta: No, it is not being paid; they say it may be paid next month.

Shri A. P. Sharma: The hon. Minister has stated that the position of the collieries is such that it was necessary to increase the coal price to pay the bonus to the workers. What machinery have Government got to check up whether the collieries are making less profit or enormous profit or they are not running at a loss? Do they check their balance sheets?

Shri S. K. Dey: Cost accountants on behalf of the Ministry of Finance are now inquiring into the cost of production of a representative section of collieries in the country; their report is expected very shortly.

Shri A. P. Sharma: He has said that they are examining and inquiring. But earlier he said that the collieries' condition is such that they cannot pay the bonus. So, without concluding the enquiry, how did Government come to this conclusion that they are not in a position to pay.

Shri S. K. Dey: There is also a recurring study continually made by the Coal Controller's office into the position of the collieries and their cost of production.

Expansion of Panna Diamond Mine

+

*779. **Shri K. N. Tiwary:**
Shri P. R. Chakraverti:

Will the Minister of **Mines and Metals** be pleased to state:

(a) whether the Panna Diamond mine, the main supplier of the industrial diamonds, is proposed to be expanded with the collaboration of a British firm;

(b) whether the said firm has submitted a project report;

(c) if so, whether Government have given their approval; and

(d) whether it is a fact that Hungary has agreed to provide a plant for the treatment of diamonds?

The Deputy Minister in the Ministry of Mines and Metals (Shri S. A. Mehdi): (a) to (c). The Panna Diamond Mines consists of two prospects —Ramkheria and Majhgawan. On the basis of further prospecting carried out in the Ramkheria area, the Consultants M/s John Taylor & Sons of U. K. have prepared a revised Project Report. This Report is under consideration of the Government.

The development of the Majhgawan Mine had been recommended by them earlier. This Scheme has been sanctioned by Government and is under implementation.

(d) Yes, Sir. An offer for the supply of a treatment plant for the recovery of diamonds at Majhgawan has been received from a Hungarian Trading Company. The offer is under examination.

श्री क० ना० तिवारी : यह जो प्रोपोजल उन्होंने दी है, इसके मेन-फीचर्स क्या हैं, जो ग्रन्डर कन्सीडेशन हैं ?

श्री सै० ग्र० मेहदी : इस वक्त जो प्रपोजल उन्होंने दी है उसमें 90,000 कैरेट डायमण्ड निकालने के लिये थर्ड प्लान में था, उसको ही फोर्थ प्लान में निकालने की तजवीज की गई है ।

श्री क० ना० तिवारी : ग्रभी तक इन खानों से कितना डायमण्ड निकाला जाता था ग्रौर इस स्कीम के लागू होने के बाद से कितने डायमण्ड की उत्पत्ति हुई ग्रौर उसकी वैल्यू क्या है ?

श्री सै० ग्र० मेहदी : इन खानों से ज्यादा डायमण्ड नहीं निकला था । पिछले साल 1,397 डायमण्ड — वजन 813.51 कैरेट निकले, सन् 1964 में करीब 3386